Diamond Comics

D-1367

महाबली शाका और विकराला

महाबली शाका और विकराला

युवती ने हैरत से शाका की ओर देखा-
लगता है, आप इस प्रथा से अनभिज्ञ हैं!
प्रथा? कैसी प्रथा?
कल रक्षा बंधन है। रक्षा बंधन से पहले वाली रात बहिनें अपने भाई की मंगल-कामना के लिए, नदी के जल में जलते दीपक छोड़ा करती हैं।
ओह! तो यह बात है?
शाका की जिज्ञासा शांत हो चुकी थी, इसी-लिये वह आगे बढ़ गया-
क्या इतना पवित्र होता है भाई-बहिन का रिश्ता!
कुछ ही दूर पहुँचा था वह-
बहू हू हू... हिच्च SSS बहू हू हू!
कौन है यह रात के इस वीराने में क्यों रो रही है, ये?
जा पहुँचा शाका उसके पास-
क्यों रो रही हो तुम? क्या दुख है तुम्हें?
बहू हू हू!

उस युवती ने जब अपना चेहरा ऊपर उठाया तो उसका चेहरा आंसुओं से तर था-

क्यों न रोऊं मैं? और युवतियों की तरह मैं नदी में जलते दीपक नहीं छोड़ सकती।

ऐसा क्यों? तुम नदी में दीपक क्यों नहीं छोड़ सकती।

मेरे कोई भाई जो नहीं है।

ओह!

सब बहिनें अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं। एक मैं ही बदनसीब ऐसी हूँ, जो इस दिन को रोते-रोते गुजार देती हूँ।

अब से इस दिन को तुम रोते-रोते नहीं, अपितु हंस कर गुजारा करोगी।

अच्छा... वह कैसे?

अपने भाई की कलाई पर राखी बांध कर।

भाई ऽऽऽ, कहाँ है मेरा भाई?

तुम्हारा भाई तुम्हारे सामने खड़ा है!

आप मेरे भाई बनेंगे?

बेशक!

क्या मैं अपने भाई का परिचय जान सकती हूँ?

मेरा नाम शाका है। और मैं कोसिमा का सम्राट हूँ।

ओह! आप शाका हैं? आपकी बहादुरी के चर्चे तो मैंने बहुत सुने हैं।

क्या अब मैं तुम्हारा परिचय जान सकता हूँ?

मेरा नाम वसुन्धरा है। मैं भोरगढ़ के राजा भवरसिंह की पुत्री हूँ।

भोरगढ़ तो यहाँ से बहुत दूर है, बहिन। रात के इस समय तुम अपने राज्य से इतनी दूर क्यों आई हो?

किसी भाई के न होते हुए भी मैं अपनी सौतेलियों के साथ आज की रात यहाँ आया करती हूँ।

वसुन्धरा बहिन- इस साल तुम्हारा यहाँ आना सफल हुआ।

... यहाँ आने से तुम्हें तुम्हारा भाई भी मिल गया है। क्या अब तुम भाई की मंगल कामना के लिए नदी में जलता दीपक नहीं छोड़ोगी?

ओह! क्यों नहीं!

बसुन्धरा ने एक दीपक जलाया–

और–

हे ईश्वर! मेरे भाई की लम्बी उम्र करना!

चलो बहिन-बहुत रात हो चली है। तुम्हें तुम्हारे राज्य छोड़ आऊं।

चलिये-भइया!

अपनी सखियों और शाका के साथ बसुन्धरा लौट पड़ी वहाँ से–

दुर्गम रास्ता था वह-

अरे!

शाक्य ने सामने पहुंचकर उस जंगली शेर की आंखों में अपनी आंखें डाल दीं।

शेर पहचान चुका था अपने मित्र को।

अरे! यह क्या? शेर तो दुम दबा कर वापस जा रहा है।

जब शेर झाड़ियों में ओझल हो गया-

शाक्य भइया- आपने यह चमत्कार कैसे किया?

मैंने कोई चमत्कार नहीं किया बहिन!

तो फिर हिंसक शेर अपना क्रोध त्याग कर, इस तरह दुम दबा कर यहां से क्यों चला गया?

बहिन! जंगली जीव-जन्तु मेरे मित्र हैं!

... उनके सुख-दुख का साथी हूँ मैं। मुझे पहचान कर शेर वापस लौट गया है।

ओह! ऐसा?

फिर उनका काफिला आगे बढ़ चला-

भोरगढ़ पहुँचते-पहुँचते भोर हो चली थी।

प्रणाम सूर्यदेव!

राजा भंवर सिंह खुश हुआ सारी बात जान कर-

महाबली शाका... हमारी बेटी बसुन्धरा के भाई बने हो तुम- यह जान कर हमें खुशी हुई।

धन्यवाद महाराज!

और फिर बसुन्धरा ने शाका की कलाई पर राखी बाँधी-

राखी बाँधने के पश्चात-

भइया... राखी बाँधने के बदले में आप मुझे क्या देने वाले हैं?

मैं कुछ समझा नहीं, बहिन- क्या कुछ दिया जाता है?

शाका को असमंजस में पड़ा देखकर-

महाबली क्या तुम्हारे यहाँ रक्षा बंधन की प्रथा नहीं मनायी जाती है?

नहीं महाराज!

... इसीलिये मुझे इस पुनीत पर्व के नियम कायदे नहीं पता है।

फिक्र न करो- इस दिन बहिन से राखी बंधवा कर भाई बहिन की रक्षा का भार अपने ऊपर लेने की कसम खाया करते हैं। और बहिन को उपहार इत्यादि स्वरूप कुछ धन दिया करते हैं।

सारी बात जानकर-

बहिन- जब भी तुम पर कोई संकट पड़ेगा तुम्हारा यह भाई तुम्हारी रक्षा के लिए भागा चला आयेगा!

शाका ने अपने गले में पड़ी मोतियों की माला उतारी-

लो बहिन- भाई की ओर से यह तुच्छ उपहार स्वीकार करके एक जंगली भाई को कृतार्थ करो!

वसुन्धरा ने उस माला को आदरपूर्वक मस्तक से लगा लिया-

मेरे जीवन का सबसे बहुमूल्य पुरस्कार है ये।

अब शाका ने राजा भवंरसिंह से कहा–
अच्छा महाराज– अब मैं विदा चाहूंगा।
जा रहे हो, महाबली?
जी महाराज– कोसिमा के लोग मेरी राह देख रहे होंगे।
तब मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं, महाबली।
पर एक विनती है तुमसे– बसुन्धरा का विवाह, जीतगढ़ के युवराज विक्रम के साथ तय हो गया है...
...बीस दिन पश्चात् आने वाली पूर्णिमा के दिन, राजकुमारी बसुन्धरा व युवराज विक्रम का विवाह होगा। उस मौके पर तुम्हें अवश्य उपस्थित रहना है!
एक बहिन के विवाह में भाई न आये, यह कभी हो सकता है महाराज? मैं विवाह में अवश्य आऊंगा।
शाका चल पड़ा भोरगढ़ से–

कपाल पर्वत की एक कन्दरा का दृश्य था वह-

जय तंत्र की देवी तांत्रिका- तुझे मनाऊं... तुझे रिझाऊं... तेरी शान में बोल मंत्रिका... जय तंत्र की देवी तांत्रिका!

तांत्रिक विकराला था वह-

विकराल, काल

बनना चाहे तेरा भक्त। सुदृढ़ बनना चाहो मेरी इच्छा पूरी कर दे तू। विकराल तेरा दर्शन करना चाहे।

तांत्रिक क्रिया का एक हिस्सा थी यह क्रिया-

और फिर-

ले तांत्रिका देवी- भक्त तुझे अपना खून अर्पण कर रहा है। तू प्रसन्न हो- प्रसन्न हो!

विकराला के चेहरे पर वीभत्स के भाव थे-

मेरे रक्त को पीकर भी तू तृप्त नहीं हुई देवी। कोई बात नहीं- मैं तेरी प्यास बुझा कर ही छोड़ूंगा!

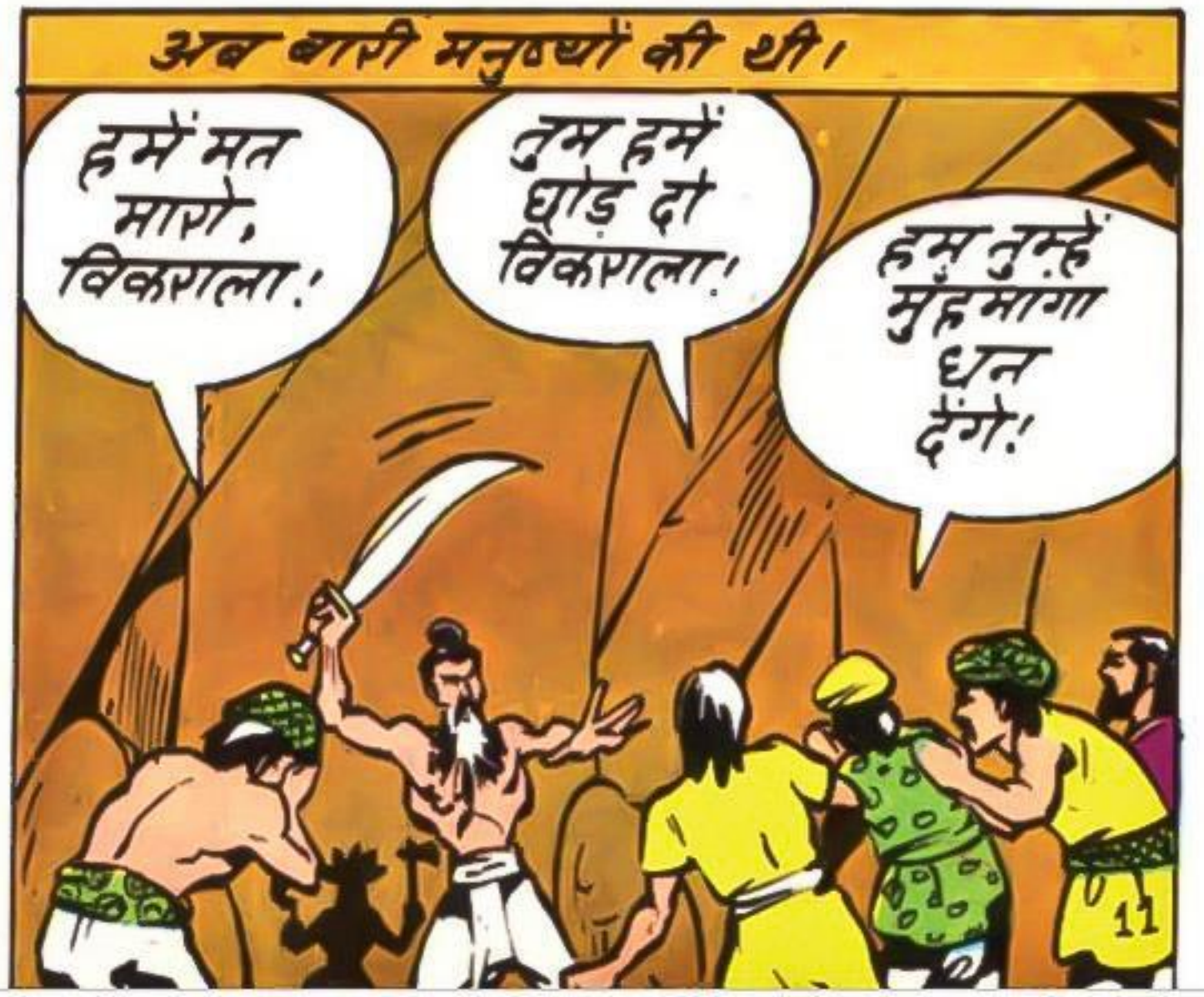

खचाक
पी देवी... जितना चाहे रक्त पी!
बेचारे निरीह भेड़ें थी, वे।
पी देवी- रक्त पी देवी!
अब बारी मनुष्यों की थी।
हमें मत मारो, विकराला!
तुम हमें छोड़ दो विकराला!
हम तुम्हें मुंहमांगा धन देंगे!

विकराला कहाँ सुनने वाला था-
हा...हा...हा! विकराला से रहम की भीख मांग रहे थे।
मानव रक्त एक पात्र में भर कर, विकराला ने देवी की प्रतिमा के चरणों में रख दिया-
तांत्रिक देवी- अब तो खुश होकर मुझे दर्शन दे!
तभी गुफा में एक आवाज़ गूँज उठी-
विकराला- मुझे प्रसन्न करना चाहता है, तो मेरी प्रतिमा के चरणों में रखे खून भरे पात्र को उठा और प्रसाद समझ कर पी जा।
ऐसा ही किया विकराला ने-
उसी समय-
ओहऽऽऽ देवी आप?

देवी के चरणों में लोट पोट हो गया था, विकराला-

आज मेरी तपस्या सफल हुई!

विकराला... आखिर तूने मुझे प्रसन्न कर ही लिया, बोल, मुझसे तुझे क्या चाहिये?

माँ तांत्रिका... आज से एक वर्ष पूर्व, शिवालिक की घाटी में संसार के समस्त तांत्रिकों का विशाल समागम हुआ था!

उसी समागम में सभी तांत्रिकों ने मेरा मजाक उड़ाया था- वे मेरी शारीरिक संरचना के कारण मुझे हेय दृष्टि से देखते थे।

हुंह... हड्डियों के इस कंकाल को भी इस समागम में ज़रूर आना था।

हा-हा-हा

...उस समागम में से मैं बहुत ही अपमानित होकर वापिस लौटा था। तभी मैंने कसम खायी थी, कि मैं संसार का सबसे...

...श्रेष्ठ तांत्रिक बन कर रहूंगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु, मैं एक वर्ष से तेरी पूजा आराधना में लीन हूँ, माँ!

... संसार के सभी तांत्रिकों को मैं अपने आधीन देखना चाहता हूँ। मेरी यह इच्छा पूरी कर दो माँ!

ओह! तो यह चाहता है तू, विकराला!

तंत्र की देवी सोच में पड़ गई।

यह देख-

यह क्या माँ? तुम तो सोच में पड़ गई? क्या मेरी इच्छा पूरी नहीं करोगी माँ?

तब तंत्र की देवी ने कहा-

नहीं- ऐसी बात नहीं है विकराला! पर...

पर क्या माँ?

तू संसार का सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक बन सकता है, इसके लिए तुझे एक विशाल नरबलि यज्ञ का आयोजन...

...करना होगा। उस नरबलि यज्ञ में पूरे एक हज़ार एक मानवों की एक साथ बलि देनी होगी तुझे। उस यज्ञ की एक विशेषता और है...

... उस नरबलि यज्ञ के कर्ता को सपत्नीक ही यज्ञ की अग्नि में आहुति देनी होती है। तभी यह यज्ञ सफ़ल हो पाता है अन्यथा नहीं।

ओह!

एक शर्त और है। यज्ञ के कर्ता की पत्नी, संसार की सबसे सुन्दर स्त्री होनी चाहिये।

ओह! करेला और वह भी नीम चढ़ा।

... मेरी कुरूपता के चलते कोई बदसूरत से बदसूरत युवती भी मेरे साथ ब्याह रचाने को तैयार नहीं होती। फिर कोई विश्व सुन्दरी मेरे साथ ब्याह कैसे कर सकती है देवी?

यह तुम्हारे सोचने की बात है विकराला!

तुझे सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक बनना है, तो यह सब तो करना ही होगा।

देवी! मुझे तो यह भी पता नहीं, कि संसार की सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?

वह मैं बताती हूँ! सुन- भोरगढ की राजकुमारी वसुन्धरा, विश्व की सबसे सुन्दर स्त्री है।

आने वाली पूर्णिमा को जीतगढ़ के युवराज विक्रम के साथ उसका विवाह होने वाला

यह विवाह मैं होने दूंगा, तब न देवी माँ! अब वसुन्धरा का विवाह होगा, तो सिर्फ मेरे ही साथ होगा।

विकराला एक बात और ध्यान रखना, मैं मानती हूँ कि तू छल-बल के सहारे वसुन्धरा से विवाह तो कर लेगा...

...पर एक अड़चन और है। नरबलि यज्ञ में यदि वसुन्धरा स्वेच्छा से भाग लेगी तभी यज्ञ सफल हो पायेगा, अन्यथा

ओह! यह तो बड़ी विचित्र शर्त है, माँ!

पर कोई बात नहीं है। मैं वसुन्धरा को इस बारे में भी रज़ामंद कर लूँगा!

तब तेरी विजय निश्चित है, विकराला!

जा, मेरा आशीर्वाद तेरे साथ है।

उसे आशीर्वाद देकर देवी अदृश्य हो गई।

अट्टहास का उग्र विकराल-

हा... हा... हा! अब मुझे सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक बनने से कोई नहीं रोक पाएगा।

अब मेरा सबसे पहला काम, नर बलि यज्ञ के लिए एक हज़ार एक आदमी चाहिए।

इसी उद्देश्य से उसने आँख मूंद कर ध्यान लगाया

मेरी इस गुफा से थोड़ी ही दूरी पर एक मनुष्य जा रहा है- मेरा सबसे पहला शिकार यही होगा।

मन ही मन वह एक मंत्र बुदबुदाया-परिणाम स्वरूप-

आपने मंत्र के द्वारा मुझे बुलाया है- कहिये मैं आपके किस काम आ सकता हूँ?

सम्मोहन, यहाँ से कुछ ही दूरी पर एक मानव जा...

...रहा है। उसे अपने सम्मोहन में फंसा कर तुम्हें उस मानव को मेरी गुफा तक लाना है।

यह तो बड़ा ही साधारण काम है, मेरे लिए।

सम्मोहन चल पड़ा था
अपना कार्य सिद्ध करने-

परिणाम स्वरूप अपनी दिशा बदल चुका था वह मनुष्य-

सम्मोहन पासा फेंक चुका था उस पर, सम्मोहन-

गुफा तक ले आया था उसे, सम्मोहन-

विकराला खुश हो उठा-

शाबाश सम्मोहन! तुम्हें मेरे लिए एक हज़ार एक मनुष्यों का प्रबन्ध करना है। जाओ आज से इस काम में जुट जाओ!

जो आज्ञा!

सम्मोहन उड़ चला था वहाँ से-

हा-हा-हा! अब मुझे संसार का सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक बनने से कोई नहीं रोक पायेगा।

इधर मोरगढ़ में-

गुरुदेव! आज मोरगढ़ में पधारे, यह मेरा परम सौभाग्य है।

राजा भवंरसिंह ने अपने गुरु चक्र देव का खूब आदर सत्कार किया-

तत्पश्चात—

गुरुदेव, यह मेरी पुत्री बसुन्धरा है- आने वाली पूर्णिमा को इसका विवाह है। यह विवाह सफल तो रहेगा न गुरुदेव?

राजकुमारी बसुन्धरा की हस्तरेखाएं देखने में जुट गये थे, चक्रदेव—
ओहऽऽ यह क्या?
क्या हुआ गुरुदेव?
यह विवाह होते ही, राजकुमारी और युवराज विक्रम के जीवन में अनिष्टकारी चक्रवात आयेगा।
खतरे की तो कोई बात नही है, गुरुदेव?
नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। फिर भी हमें सचेत रहना होगा।
चक्र देव ने हवा में हाथ लहराया—
परिणाम स्वरूप, एक छोटा सा पिंजरा उनके हाथ में आ चुका था। उस पिंजरे में कैद थी, एक मैना—

उस पिंजरे को बसुन्धरा को देते हुए उन्होंने कहा–
पुत्री... आज के बाद इस पिंजरे को तुम्हें सदैव अपने पास रखना होगा। यह मैना तुम्हारा बहुत साथ देगी, पुत्री!
जी गुरुदेव!
महाराज अब मैं भोरगढ़ की सभी सीमाओं को अभि-मंत्रित जल के द्वारा अभिमंत्रित करूंगा!
वह किसलिये गुरुदेव?
ताकि कोई दुरात्मा राजकुमारी बसुन्धरा के विवाह में कोई विघ्न उत्पन्न न कर सके!
क्या ऐसा हो सकता है, गुरुदेव?
कुछ भी असंभव नहीं है राजन! हमें समय से पहले ही सचेत रहना होगा!
और फिर–
पूरे भोरगढ़ राज्य का अभिमंत्रित जल द्वारा, सुरक्षा कवच में बांध चुके थे चंद्रदेव–

वसुन्धरा खुश थी-
गुरुदेव चक्रदेव ने इस मैना को उपहार में देकर मुझ पर बहुत कृपा की है।
समय बीता- और तब एक बारात चढ़ी...
यह बारात जीतगढ़ के युवराज विक्रम की थी
महाबली शाका, राजकुमारी वसुन्धरा के विवाह में भोरगढ़ आ चुका था-
आओ महाबली... हम तुम्हारी ही राह देख रहे थे।
फिर महाबली शाका वसुन्धरा से मिला-
कैसी हो बहिन?
आपके आशीर्वाद से ठीक ही हूँ, भैइया।
22

बारात का भोरगढ़ में भव्य स्वागत किया गया।

इधर दूसरी ओर–

बारात भोरगढ़ के महल के मुख्य द्वार पर आ पहुँची है। अब मुझे भी अदृश्य होकर तुरंत वहाँ पहुँचना चाहिए।

चल पड़ा वह अपने मिशन पर–

बहुत प्रसन्न था आज वह–

संसार की सबसे सुन्दर स्त्री के साथ, आज विवाह करूंगा मैं।

युवराज विक्रम के रूप में उस सुन्दरी के साथ सात फेरे लूंगा मैं और असली युवराज विक्रम मेरी कैद में होगा, नरबलि के लिए। हा-हा-हा!
लेकिन-
ओह! यह क्या? चारों ओर से भोरगढ़ की सीमा को पवित्र जल के द्वारा सुरक्षा कवच में बांधा गया है।
उस सुरक्षा कवच के कारण अपनी योजना में मुझे थोड़ा फेर-बदल करना पड़ेगा। अब मुझे यहीं रुक कर, युवराज विक्रम की बारात की बाट जोहनी पड़ेगी।
दली हुई इन परिस्थितियों में, विकराला और
र भी क्या सकता था-
युवराज विक्रम जब अपनी दुल्हन की डोली और बारात के साथ इधर से गुजरेगा, तब मैं बसुन्धरा को सम्मोहन के द्वारा अपने पास बुलवा लूंगा।
इधर बसुन्धरा विक्रम के गले में जयमाला पहना रही थी-

राजा भंवर सिंह के साथ ही महाबली शाका ने भी कन्यादान किया-

भोर का समय था, जब वसुन्धरा की डोली भोरगढ़ के महल से बाहर निकली-

बहिन वसुन्धरा... जा रही हो- पर अपने भाई शाका को कभी न भूलना।

गुरु देव चक्र देव के द्वारा दिया गया मैना का पिंजरा, वसुन्धरा की डोली में रख दिया गया था।

भोरगढ़ से विदा हो चल पड़ी थी युवराज विक्रम की बारात-

राजन्! बहिन की विदाई हो चुकी है। अब मैं भी विदा चाहूँगा।

अच्छा महाबली!

इधर ध्यान में लीन था विकराला-

बारात चल पड़ी है, भोरगढ़ सो जल्दी ही अब वह यहाँ से होकर गुजरेगी।

ऐसा ही हुआ था—
सुरक्षा कवच के घेरे से जब बारात बाहर निकली।
अब मुझे सम्मोहन को बुलाना चाहिये।
और फिर—
आपने मंत्र के द्वारा मुझे बुलाया है। कहिये मैं आपके किस काम आ सकता हूं?
सम्मोहन! वह दुल्हन की डोली जाते हुए देख रहे हो न?
उस डोली को मेरी गुफा तक पहुंचाना है, तुम्हें।
यह तो बड़ा ही साधारण काम है, मेरे लिए।
सम्मोहन उड़ चला था उस दिशा की ओर—

सम्मोहन पासा फेंका था सम्मोहन ने चारों कहारों पर–

परिणाम स्वरूप चारों कहारों ने तुरन्त अपनी दिशा बदल डाली–

विकराला अपनी गुफा में पहुँच चुका था।

सम्मोहन भी अब राजकुमारी वसुन्धरा की डोली को लेकर आता ही होगा।

कहार बिना रुके सम्मोहन के सम्मोहन पाश में बंधे अपना रास्ता तय कर रहे थे।

उन्हें कोई होश न था–

आखिरकार सम्मोहन ने उन्हें विकराला की गुफा में पहुंचा ही दिया।

शाबाश सम्मोहन! राजकुमारी वसुन्धरा को यहाँ लाकर तुमने बहुत ही श्रेष्ठ कार्य किया है।

कहारों का सम्मोहन हट चुका था।

हैं! यह हम कहाँ आ गये?

हैरत में न पड़ो— नर बलि के लिए एक हजार एक लोगों में मैं तुम चारों को भी शामिल करता हूँ।

घिग्घी बंध गई थी चारों कहारों की यह सुन कर—

हमें छोड़ दो! हमें जाने दो!

हा! हा! हा!

डोली में बैठी वसुन्धरा चौंक पड़ी—

हा! हा! हा!

बाहर यह क्या हो रहा है? कौन हंस रहा है, पागलों की तरह?

उसने जब डोली का पर्दा हटाया-

ओह! तो तुम हो रूप की रानी बसुन्धरा? वाकई बहुत खूबसूरत बला हो!

लेकिन तुम कौन हो? मेरे पति कहाँ हैं?

बसुन्धरा तुम्हारा पति मैं बनूंगा। मुझसे विवाह करना होगा अब तुम्हें।

क्या बक रहे हो?

मैं बक नहीं रहा हूँ, बसुन्धरा! मैं तांत्रिक विकराला जिस बात को ठान लेता हूं, फिर उसे करके रहता हूं।

नहींऽऽ

इधर दूसरी ओर-

अरे! कहार डोली लेकर कहाँ गायब हो गये?

बारात में हलचल मच गई।

दुल्हन की डोली लेकर, कहार न जाने कहाँ गये?

आखिर यह हुआ कैसे?

कहारों की इतनी हिम्मत हुई कैसे?

बहुत खोजबीन के पश्चात भी जब दुल्हन की डोली का कोई पता न चला-

कैसा दुर्भाग्य है यह आज हमारा? बिना दुल्हन के ही बेटे की बारात हमें जीतगढ़ ले जानी पड़ेगी!

बारात चल पड़ी जीतगढ़ की ओर-

इधर कराल पर्वत की उस कंदरा में-

मैं मर जाऊंगी, पर तुम्हारे साथ विवाह नहीं करूंगी। मेरा विवाह युवराज विक्रम के साथ हो चुका है।

उस विवाह को तुम्हें भूलना होगा, राजकुमारी वसुन्धरा!

तुम्हारी भलाई इसी में है, कि तुम खुशी-खुशी मेरे साथ विवाह कर लो।

यह कभी नहीं होगा पापी! मैं तुझसे विवाह नहीं करूंगी।

आह!

बोल, करेगी मेरे साथ विवाह!

तड़ाक!

नहीं...नहीं... नहीं! मैं तेरे साथ विवाह नहीं करूंगी।

आज नहीं तो कल, तू इस बात के लिए राजी होगी। आज से तू मेरी बंदिनी है।

JD

बदली हुई परिस्थितियों में राजकुमारी वसुन्धरा आँसू बहाने के सिवा और कर भी क्या सकती थी
बहहहह... आखिर यह हुआ क्या? मैं इस नीच विकराला के चंगुल में कैसे फंसी?
...युवराज विक्रम कहाँ गये? कुछ समझ नहीं आ रहा है, कि ऐसे में मैं करूं तो क्या करूं?
तभी उसकी नज़र मैना के पिंजरे पर पड़ी।
गुरुदेव ने कहा था कि यह मैना मेरा बहुत साथ देगी। यह मैना किस प्रकार मेरा साथ दे सकती है?
तभी–
हाँ, ऐसा करना ठीक रहेगा। मुझे इस मैना के द्वारा अपने भाई शाको तक अपनी सूचना भिजवानी चाहिए।
उसने अपना आंचल फाड़ा–
चर्र चर्र
और कटार से अपनी उंगली को चीरा लगाया
आह!
अब उसने मैना का एक पाँव तोड़ा।
31

और उस पंख को अपने खून में डुबाकर, आंचल के उस टुकड़े पर लिखने लगी।

मेरे प्यारे भाई शाका- मैं इस समय संकट में हूँ।

आंचल के उस टुकड़े को लपेट कर उसने मैना के चोंच में फंसा लिया-

मेरी प्यारी मैना, मेरे इस पत्र को मेरे भाई शाकातक पहुँचा आ।

मैना उड़ चली उस पत्र को लेकर-

इधर शाका भोरगढ़ से कोसिमा पहुंच चुका था।

अपने महल में प्रवेश करने ही वाला था वह-

ओह! वसुन्धरा बहिन की मैना? यह यहाँ क्यों? इसे तो वसुन्धरा के पास होना चाहिए।

मैना आ उतरी थी उसके सामने–

अरे! मैना की चोंच में यह क्या लिपटा हुआ है?

शाका ने उसे मैना की चोंच से निकाल लिया

इस पर तो कुछ लिखा हुआ है।

शाका पढ़ने लगा उसे–

मेरे प्यारे भाई शाका- इस समय मैं संकट में हूं- मेरी रक्षा करो भैइया। मैना आपको मुझ तक पहुंचा देगी। आपकी बहिन -वसुन्धरा-

चौंका था पढ़कर बुरी तरह शाका–

बहिन वसुन्धरा संकट में कैसे फंस गई? वह तो अपने पति के साथ, ससुराल भोरगढ़ से विदा हुई थी।

मुझे बहिन की सहायता को जाना ही होगा।

चल मैना-
मुझे रास्ता दिखा!
अब मैना आगे-आगे थी और शाका उसका अनुसरण कर रहा था-
राह में भोरगढ़ पड़ा-
महाराज, वसुन्धरा बहिन संकट में है।
क्याऽऽ?
हाँ महाराज— वसुन्धरा की यह मैना मुझ तक उसका संदेश लाई है।
ओह! लेकिन वसुन्धरा विपत्ति में फंसी कैसे?
यही जानने के लिए मैं निकला हूँ, महाराज!
शाका- भोरगढ़ की सेना को मैं तुम्हारे साथ किये देता हूँ! हो सकता है, कि तुम्हें सेना के सहयोग की आवश्यकता हो।

मुस्कराया था शाका यह सुनकर।
अपनी बहिन की रक्षा के लिए, मैं अकेला ही काफी हूं, महाराज!
और शाका चल पड़ा था अपने लक्ष्य की ओर–
इधर विकराला पूछ रहा था वसुन्धरा से–
यह पिंजरा खाली कैसे पड़ा है। पिंजरे की मैना कहां गई?
मैना मेरा संदेश लेकर महाबली शाका के पास गई है, विकराला!
क्याऽऽ? महाबली शाका तुम्हारा भाई है?
हाँ विकराला! महाबली शाका को लेकर, मैना यहाँ पहुँचती ही होगी।
...और तब मेरा भाई शाका, तेरी बोटी-बोटी कर डालेगा विकराला!
35

क्रोध भड़क उठा था विकराला का-

ओह!

धटाक

नागिन... तू क्या समझती है, कि शाका मुझे मात दे पाएगा. कभी नहीं - तेरे महाबली भाई का तो मैं अभी इंतजाम किए देता हूँ!

विकराला ने तुरन्त एक मंत्र पढ़ा-

अकड़ धूं...
पकड़ धूं....
अगड़म-बगड़म...
धूं...

परिणाम सामने था- तुम चारों जाओ और हमारी ओर आते शाका को मौत के घाट उतार आओ।

जो हुक्म!

चल पड़े चारों दैत्य वहाँ से-

तंत्र-मंत्र द्वारा उत्पन्न वे चारों दैत्य, अब तुम्हारे भाई को जीवित नहीं छोड़ेंगे।

नहीं!

चारों दैत्य, आगे बढ़े जा रहे थे।

हुम्म!

हुम्म!

हुम्म!

हुम्म!

चौंका था शाका उन्हें देख कर–
हुम्म!
मानवों की धरती पर दैत्य!?
चारों टूट पड़े एक साथ शाका पर–
हम तुझे नहीं छोड़ेंगे!
हम तुझे खाकर अपनी भूख मिटायेंगे।
यह दृश्य देख मैना वहाँ से उड़ चली एक दिशा की ओर–
अरे!
जा गिरा था शाका दूर–
धड़ाक
आह!
ये दैत्य तो बहुत बलशाली हैं!

एक पेड़ को जड़ से उखाड़ कर एक दैत्य दौड़ पड़ा था, शाका की ओर-

यह तो इधर ही आ रहा है, मेरी ओर।

और फिर जल्दी ही-

आह sss शरीर की तमाम हड्डियाँ चरमरा गई हैं मेरी।

इधर मैना पहुंच चुकी थी चक्रदेव के पास-

मैना तुम? तुम्हारा यहाँ लौटना बता रहा है कि राजकुमारी वसुन्धरा पर संकट आ पड़ा है।

मैना ने अपना रूप बदला-

हां, गुरुदेव! दुष्ट तांत्रिक विकराला ने वसुन्धरा को अपने कब्जे में कैद कर रखा है।

तो आखिर वही हुआ जिसका हमें डर था।

गुरुदेव, वसुन्धरा की रक्षार्थ जो निकले शाका पर...

... तंत्र-मंत्र द्वारा उत्पन्न चार दैत्य वार कर रहे हैं उसकी सहायता करो!

तब चक्रदेव ने उसे आदेश दिया–

मैना सुन्दरी तुम्हारा कार्य पूरा हो चुका है। इसलिए अब तुम जा सकती हो!

जो आज्ञा गुरुदेव!

मैना सुन्दरी तुरंत अदृश्य हो गई।

उसके अदृश्य होने पर–

अब अपना शरीर यहीं छोड़ कर, हमें भी सूक्ष्म रूप में शाका की सहायता के लिए जाना है।

ऐसा ही किया था उन्होंने

चक्रदेव का सूक्ष्म शरीर ही प्रकट हुआ था, वहाँ–

शाका... घबराना नहीं– तुम्हारी सहायता को आ पहुँचा हूँ मैं।

तब उन्होंने हवा में अपना हाथ लहराया।

उस गदा को शाका की ओर उछाल दिया उन्होंने—

लो शाका— इस चमत्कारी गदा से इन चारों का संहार कर डालो।

लपक ली थी शाका ने वह गदा—

और अपनी तमाम ताकत लगाकर, शाका टूट पड़ा कहर बन कर उन पर—

ओह! सचमुच ही चमत्कारी गदा है यह तो।

धड़ाक

आह!

दूसरे दैत्य की बारी थी अब—

धड़ाक!

आह!

एक-एक करके चारों दैत्यों को यमलोक पहुंचा चुका था

धड़ाक

अब शाका मुख्यातिथ था चक्रदेव से-

आपको मैंने पहचाना नहीं- इस प्रकार मेरी सहायता करने वाले कौन हैं आप?

महाबली, मेरा नाम चक्रदेव है। राजा अंबरसिंह का गुरु हूँ मैं।

ओह! आर्य चक्रदेव हैं?

शाका ने आदर पूर्वक उन्हें प्रणाम किया।

चिरंजीवी हो, महाबली शाका!

शाका को सुध आयी तब मैना की-

ओह! वह मैना तो कहीं दिखाई नहीं दे रही? अब मैं राजकुमारी वसुन्धरा तक कैसे पहुंचूंगा।

कहा था तब चक्र देव ने -

वसुन्धरा तक मैं तुम्हें पहुँचाऊंगा, महाबली!

आप गुरुदेव!

हाँ महाबली- तुम जिस मैना को खोज रहे हो, उस मैना को योगबल से हमने ही उत्पत्ति की थी।

और फिर-

एक विशाल पहाड़ी के पास जा चुके थे चक्रदेव-

शाका इस पत्थर पर गदा का प्रहार करो। यही विकराला की गुफा है।

शाका ने प्रहार किया गदा से-

धड़ाक!

गुफा के द्वार पर बाहर से, यह कौन प्रहार कर रहा है?

धड़ाक!

शाका जुटा था अपने प्रयास में-

धड़ाक

जल्दी ही वह अपने प्रयास में सफल हो गया।

शाका- अन्दर प्रवेश करो!

शाका ने गुफा में प्रवेश किया।

विकराला से सामना हुआ था उसका-

तो तुम हो वह दुष्ट जिसने हमारी बहिन का अपहरण किया है?

तुम sss शाका हो?

तूने सही पहचाना दुष्ट! मैं शाका ही हूं, तेरी मौत!

हंसा यह सुन कर विकराला–
हा... हा... हा! मुझे कोई नहीं मार सकता! मैं अजेय हूँ। माँ तान्त्रिका का आर्शीवाद है, मुझे!
और फिर–
फू ऊ ऊ SSS
शाका उड़ चला था उस बवंडर में–
ओह!
शाका आ पड़ा था गुफा से बाहर–
धड़ाम
ओह!
तब चक्रदेव ने अपनी माया रची–
उस माया से बवंडर शांत हो चुका था।

विकराला काल बन कर आ खड़ा हुआ था, शाका की छाती पर-
तेरी शक्ति पर तेरी बहिन वसुन्धरा को बहुत नाज है। अब तू मेरे हाथों मरेगा शाका!
तभी-
ओह! मायावी गदा से प्रहार करता है, मुझ पर!
शाका कहर बन कर टूट पड़ा उस पर-
आह!
आह! मुझे मत मारो शाका!
मारते-मारते हुलिया बिगाड़ दिया था, शाका ने उसका-
आह!
शाका... इसकी हालत पतली हो चुकी है।

... इसे छोड़ कर गुफा में जाओ- वहां तंत्र की देवी तंत्रिका की विशाल प्रतिमा है। इस तलवार से उस प्रतिमा के दो टुकड़े कर डालो। ऐसा करने पर ही तंत्रिका व विकराला के तंत्र का यह साम्राज्य समाप्त हो जायेगा।
चक्रदेव से वह तलवार लेकर, शाका चल पड़ा गुफा की ओर-
नहींऽऽ शाका नहीं! मेरे तंत्र-मंत्र का साम्राज्य समाप्त मत करो।
गुफा में पहुंचने पर-
मूर्ति के खंडित होते ही-
ईईच्च
... प्राण पखेरू उड़ चुके थे, विकराला के-
इधर दूसरी ओर-
भइयाऽऽ!
बहिन बसुन्धरा, तुम ठीक तो हो न?

पूछा था शाका ने उन लोगों से—

आप सब कौन हैं?

हम एक हजार एक वह बदनसीब मनुष्य हैं, जिन्हें नरबलि के लिए विकराला ने अपनी कैद में रख छोड़ा था। हम आपके बहुत आभारी हैं।

तुम सब अब आज़ाद हो— और अपने-अपने घर जा सकते हो।

और फिर—

महाबली शाका- जिन्दाबाद!

महाबली शाका- अमर रहे!

महाबली शाका- जिन्दाबाद!

वे लोग वहां से लौट पड़े-

अब चक्रदेव ने शाका से कहा—

शाका- अब तुम भी वसुन्धरा को लेकर जाओ।

और आप गुरुदेव?

मेरी चिन्ता न करो शाका! मैं जैसे आया वैसे चला भी जाऊंगा।
अरे! चक्रदेव तो अदृश्य हो गये।
आओ बहिन- अब हम भी यहां से चलें।
जल्दी ही-
शाका पहुँच चुका था वसुन्धरा को लेकर जीतगढ़
लो युवराज विक्रम तुम्हारी अमानत तुम तक पहुंचा रहा हूं।
धन्यवाद, महाबली!
वसुन्धरा को सकुशल उसके पति को, सौंप, शाका लौट पड़ा था वहाँ से
END-
48

Presented by @sdch_club

Join us on telegram

t.me/comics_hindi

t.me/raj_comics_unofficial

t.me/tvseries_4u

t.me/video_short

t.me/joinchat/HOrD4ojPhi9YCoZU

t.me/joinchat/AAAAAFQGITMkD8puJ1QKrw